श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ अगस्त-2022

ऐनरोलमेन्ट नंबर 3. शहर ____

विद्यार्थी का नाम ____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	दुषम - सुषम
(२)	धर्म प्रवण
(३)	अकाल
(४)	पूरन
(५)	राज्य - अवस्था
(६)	शिष्टाचार प्रशंसा
(७)	विश्वासघात
(८)	अजीव
(९)	वाराणसी
(१०)	पुद्गल
(११)	न्याय
(१२)	पशु
(१३)	कसाई
(१४)	अर्थालम्बन
(१५)	परमार्थ
(१६)	अजितनाथ
(१७)	त्रिक
(१८)	अपर्याप्त
(१९)	पुरुषसिंह
(२०)	विशेष सूक्ष्म

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	मन शुद्धि
(२)	आदत
(३)	श्री पद्मप्रभ प्रभु
(४)	प्रदेश
(५)	सत्संग
(६)	मुक्ता शुक्ति
(७)	अंधकार
(८)	श्री संभवनाथ प्र०
(९)	विशेषज्ञता
(१०)	सुषम - सुषम
(११)	अग्रपूजा
(१२)	मानव
(१३)	अद्धाकाल
(१४)	अधर्मास्तिकाय
(१५)	कठोरता
(५)	गुण
(६)	काल
(७)	अदृश्य
(८)	पर्याप्ति
(९)	अड़सठ
(१०)	दिन
(११)	पल्योपम
(१२)	प्रदेश
(१३)	मूल
(१४)	स्पर्श
(१५)	निश्चय
(१६)	समग्र लोक
(१७)	है
(१८)	स्कंध
(१९)	शब्द
(२०)	आकाशास्तिकाय

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	छिलका
(२)	अवकाश
(३)	मग्न
(४)	ज्योति

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१
(२)	३	(७)	४
(३)	७	(८)	५
(४)	८	(९)	२
(५)	१०	(१०)	९

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	४००
(२)	७
(३)	२२
(४)	५
(५)	३२
(६)	२०
(७)	१०००
(८)	४
(९)	६३
(१०)	३८७३

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	५
(२)	×	(२)	१३
(३)	×	(३)	१०
(४)	✓	(४)	२१
(५)	×	(५)	५
(६)	✓	(६)	९
(७)	✓	(७)	२४
(८)	✓	(८)	१६
(९)	×	(९)	१
(१०)	×	(१०)	२०

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-८ मिले हुए गुण	= कुल गुण

जांचनेवाले की सही ____

रीमार्क ____

प्रश्न - ८

१. दुषम-दुषम नाम का छुंवा आरा इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण का होता है। इस आरे मे मनुष्य की उत्कृष्ट आयु बीस वर्ष व शरिर एक हाथ का होता है। इस आरे के मनुष्य अंत्यत ताप और शीत सहन न कर सकेगे इसलिए ~~गुफाओं~~ वैताढ्य पर्वत की दक्षिण और उतर की तरफ रहे गंगा सिंधु की गुफाओं मे रहेंगे। इस आरे मे मछली आदी का भोजन करने वाले, महाक्रोधि, निर्लज्ज, मर्यादाहिन और मरकर नरक गति मे जाने वाले होंगे छः वर्ष की स्त्रीयां इस आरे मे गर्भ धारण करेंगी।

२. श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु की संक्षिप्त जीवन यात्रा:- प्रभु पूर्व के तीसरे भव मे धातकी खंड के महाविदेह मे नंदिषेण राजा थे। बीस स्थानक की आराधना कर तीर्थंकर नामकर्म बांधा। छठे ग्रैवयक मे देव हुए वहा से वाराणसी पूरी मे प्रतिष्ठ राजा की पृथ्वी रानी के उदर से आए। जेष्ठ सुदी बारस को जन्मे प्रभु का लांछन स्वस्तिक, ऊँचाई दो सौ धनुष की थी सांवत्सरिक दान देकर जेष्ठ सुदी तेरस को दिक्षा ली। नौ मास छद्मस्थ रहे। महावदि छठ को वाराणसी मे कैवल ज्ञान प्राप्त हुआ एक लाख पूर्व कम बीस पूर्वांग दिक्षा पाली। संपूर्ण आयुष्य बीस लाख पूर्व का रहा। पाँच सौ मुनियों के साथ सम्मेद शिखर पर मोक्ष सिधारे।

4) जिन मंदिर की मुख्य आशातनाए:- जिन मंदिर की दस मुख्य आशतनाए है।

1, जिन मंदिर मे पान सुपारी आदि खाना, २. जिन मंदिर मे पानी पीना, ३ जिन मंदिर मे भोजन करना
४, जिन मंदिर मे चप्पल व जूते पहनना, ५, जिन मंदिर मे स्त्री के साथ मैथुन सेवन करना,
६, जिन मंदिर मे शयन करना, ७, जिन मंदिर मे थुकना, ८. जिन मंदिर मे पेशाब करना
९. जिन मंदिर मे मलत्याग करना, १०, जिन मंदिर मे जुंआ खेलना।

3) लज्जा गुण:- लज्जा यानें लाज, शरम, मर्यादा, दाक्षिण्यता। सज्जन को दुर्जन बनने से रोकने और उसकी सज्जनता को टिकाये रखने की जबर्दस्त ताकत है लज्जा गुण मे सत्कार्य तो उल्लासित भाव से करना है। अयोग्य कार्य करते हुए लज्जित होना है। अयोग्य कार्यों का त्याग कर सुकृती के उपासक बने।

५. पुद्गल के दस लक्षण:- शब्द, अंधकार, प्रकाश, प्रभा (ज्योति), छाया, आतप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श

शब्द लक्षण:- शब्द यानें आवाज, ध्वनि, नाद - शब्द तीन प्रकार के है।

1, सचित जीव मुंह से बोले वह:- जैसे कोयल, मोर, हमारा बोलना

२. अचित शब्द, - अचित-अजीव पदार्थो के घर्षण से, टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि जैसे बर्तन का गिरना. ३- मिश्र शब्द. जीव के प्रयत्न से बजते संगीत के साधन शंखनाद, घंटनाद, तबला, बांसुरी आदि.